हिन्दी (प्रतिष्ठा) प्रथम पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रश्न → हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन, नामकरण एवं सीमा निर्धारित करें?

उत्तर :- 6. डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त का हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन, नामकरण एवं सीमाएँ इस प्रकार है। —

- प्रारम्भिक काल या आदिकाल (1184–1350 ई०)
- मध्यकाल पूर्व मध्यकाल (1350–1600 ई०)
- मध्यकाल उत्तर मध्यकाल (1600–1857 ई०)

डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त जी ने शुक्ल जी के काल विभाजन को स्वीकार न करते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहास को तीन खण्डों में विभाजित किया है।

- प्रारम्भिक काल
- मध्यकाल
- आधुनिक काल

डॉ० गुप्त जी ने प्रारम्भिक व मध्यकाल के अन्तर्गत तीन-तीन प्रकार के काव्यों की रचना को स्वीकार किया है।

- धर्माश्रित काव्य
- लोकाश्रित काव्य
- राज्याश्रित काव्य

डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त जी धर्माश्रित काव्य परम्पराओं के अन्तर्गत पाँच काव्य परम्पराओं को स्वीकार करते हैं, जो निम्नलिखित हैं।

- ~~धर्म~~ धार्मिक रास काव्य परम्परा
- संत काव्य परम्परा
- पौराणिक काव्य परम्परा
- पौराणिक प्रबन्ध परम्परा
- रसिक भक्ति परम्परा

राज्याश्रित काव्य परम्परा के अन्तर्गत भी पाँच काव्य परम्पराओं को स्वीकारा है,

- मैथिली गीति परम्परा
- ऐतिहासिक रास परम्परा

- ऐतिहासिक चरितकाव्य
- ऐतिहासिक मुक्तक परम्परा
- शास्त्रीय मुक्तक परम्परा

लोकाश्रित काव्य के अन्तर्गत केवल दो परम्पराएँ हैं—

- रोमांस काव्य परम्परा
- स्वच्छन्द प्रेमकाव्य परम्परा

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

प्रश्न— डॉ० गणपतिचन्द्रगुप्त जी के द्वारा हिन्दी साहित्य के इतिहास का कालविभाजन, नामकरण एवं सीमा पर प्रकाश डालें।

पता—
डॉ० रामदर्शी कुमार
विभाग— हिन्दी (S.R.A.P.C)
मो० नं० - 7903046087
दिनांक- 04.02.2023